International Journal of Research in Hindi
www.hindijournal.in
ISSN: 2582-3493
Received: 02-10-2021, Accepted: 15-10-2021, Published: 28-10-2021
Volume 3, Issue 4, 2021, Page No. 1-2

हिंदी रिपोर्ताज साहित्य में काल–विभाजन एवं नामकरण के संभावना की पड़ताल

डॉ. ऋषिकेश सिंह
पी. एच. डी. (हिंदी), जामिया मिल्लिया इस्लामिया, दिल्ली, भारत

सारांश
प्रस्तुत शोध पत्र में हिंदी गद्य साहित्य भी एक महत्वपूर्ण विधा रिपोर्ताज में काल–विभाजन एवं नामकरण की संभावना के ज्यादातर पक्षों को मूल्यांकित करने का प्रयास किया गया है। शोध पत्र में काल–विभाजन एवं नामकरण की महत्ता, गद्य साहित्य में उसकी स्थिति विश्लेषण के साथ–साथ रिपोर्ताज के स्वरूप की संक्षिप्त चर्चा की गयी है। हिंदी साहित्य के अंतर्गत कथेतर या अन्य गद्य विधाओं की चर्चा तो की जाती है किंतु उनका निरूपण प्रायः फुटकल या गौण साहित्य के तौर पर ही किया जाता है। जबकि उनके विधागत लेखन ने स्वतंत्रता पूर्व एवं पश्चात् मिलाकर लगभग 75 से अधिक वर्षों का कालखंड तय कर लिया है एवं इनमें से कई ऐसी विधाएँ भी हैं जिनमें इतना लेखन तो किया ही जा चुका है कि जिसे आधार बनाकर काल–विभाजन एवं नामकरण किया जा सकता है। रिपोर्ताज उनमें से ही एक विधा है अतः रिपोर्ताज को केंद्र में रखकर एक वैकल्पिक काल–विभाजन एवं नामकरण का प्रारूप प्रस्तुत किया गया है। जिसे अन्य हेतु भी आधार बनाया जा सकता है।

मूल शब्दः रिपोर्ताज साहित्य, काल–विभाजन, नामकरण

प्रस्तावना

हिंदी गद्य साहित्य की विधाओं में रिपोर्ताज अपेक्षाकृत महत्वपूर्ण नवीन विधा है। जैसा कि कैलाश चंद्र भाटिया ने 'साहित्य में गद्य की नई विविध विधाएँ में लिखा है– ''रिपोर्ताज हिंदी गद्य की नवीन विधा है।''[1] मूलतः साहित्य विविध विधाओं का पुंज है जिसका संबंध भावनाओं और संवेदनाओं की अभिव्यक्ति में शैलीगत भिन्नता से है। इसका विकास साहित्य के आदिकाल से लेकर समकाल तक नैरंतर्य है। हिंदी साहित्य के संबंध में जहाँ पर काव्य विधा के रूप में इसका विकास उन्मेष काल से ही अनवरत है, वहीं गद्य विधाओं का उत्कर्ष प्रायः नवजागरणकालीन आधुनिकता से माना जाता है। इसके अंतर्गत उपन्यास, कहानी का स्थान महत्वपूर्ण है तो दूसरी ओर निबंध, आलोचना, आत्मकथा, जीवनी, संस्मरण, रेखाचित्र, रिपोर्ताज, डायरी, यात्रावृत्तांत, जैसी कथेतर विधाएँ भी समान अहमियत रखती हैं हालाँकि ये अलग चिंतनीय बात है कि इन्हें अन्य गद्य विधा जैसे गौण नामकरण से भी इंगित किया जाता है। इस संबंध में यह ध्यान देने योग्य है कि उपरोक्त गद्य विधाओं में भी संस्मरण, रेखाचित्र, डायरी, रिपोर्ताज आदि नवीनतम गद्य रूप हैं जिनके उद्भव एवं आवश्यकता के संबंध में हिंदी साहित्य के वृहद इतिहास में उचित ही लिखा गया है– ''जब परंपरागत विधाएँ कलाकार के भावनाओं की सफल अभिव्यक्ति नहीं कर पाती तो नवीन विधाओं की खोज की जाती है। इसी के परिणामस्वरूप रेखाचित्र, एकांकी, रिपोर्ताज, डायरी आदि नवीन विधाओं का प्रयोग किया गया है।''[2] अर्थात् नई विधाओं की आवश्यकता एक रचनाकार तब करता है जब अपने अनुभव और विचारों के साथ–साथ संवेदना को व्यक्त करने में वह अपूर्णता महसूस करता है। दूसरे शब्दों में विशिष्ट परिस्थिति से उद्भूत विशिष्ट स्वानुभूति की अभिव्यक्ति हेतु भिन्न प्रकार के साहित्य रूप की आवश्यकता। रिपोर्ताज इसी नयी विधागत शैली के माँग की देन है जिसके केंद्र में विश्वयुद्धकालीन उत्तरोत्तर बदलती हुई परिस्थितियों को तत्क्षण निरूपित करना था। शिवदान सिंह चौहान ने इस संबंध में सटीक टिप्पणी की है– ''आधुनिक जीवन की इस नयी द्रुतगामी वास्तविकता में हस्तक्षेप करने के लिए मनुष्य को नए साहित्यिक रूप विधानों को जन्म देना पड़ा है। रिपोर्ताज उनमें से सबसे प्रभावशाली और महत्वपूर्ण रूप विधान है।''[3]

रिपोर्ताज किसी ध्यानाकर्षण करने वाली यथार्थ घटना का ऐसा हृदयस्पर्शी एवं मार्मिक चित्रण है जो पाठक के समक्ष न केवल उसका जीवंत रूप प्रस्तुत कर देता है, बल्कि उसके हृदय में ठीक वैसी ही संवेदना जागृत कर देता है जैसा कि रिपोर्ताजकार ने उस घटना को देखकर स्वयं के भीतर महसूस की थी। यही कारण है कि रामविलास शर्मा इसके स्वरूप के संबंध में लिखते हैं– ''किसी घटना या घटनाओं का ऐसा वर्णन कि वस्तुगत सत्य पाठक के हृदय को प्रभावित कर सके, रिपोर्ताज कहलाएगा। कल्पना के सहारे कोई रिपोर्ताज लेखक नहीं बन सकता है।''[4] वस्तुगत सत्य पर आधारित यह विधा पत्रकारिता एवं साहित्य दोनों के तत्वों का मिश्रित रूप है। इसी कारण जहाँ एक तरफ पत्रकारिता या रिपोर्ट की भाँति इसमें घटनाकलन यथातथ्यता, तात्कालिकता, समाचार संप्रेषणीयता, यथार्थपरकता आदि का गुण होता है तो वहीं दूसरी ओर यह विधा साहित्य के मर्मस्पर्शिता, कलात्मकता, जनपक्षधरता, संवेदनशीलता, सरसता, मानवीय मूल्यों के निरूपण आदि तत्वों से भी युक्त होती है। उसी कारण रिपोर्ताज कोरी रिपोर्ट नहीं है बल्कि एक साहित्यिक रिपोर्ट है जिसका लेखक आधा पत्रकार एवं आधा साहित्यकार होता है। इस संबंध में रांगेय राघव का यह मत द्रष्टव्य है कि ''रिपोर्टें सर्जनात्मक साहित्य में आकर रिपोर्ताज बन गयी।''[5]

साहित्येतिहास लेखन में सामग्री संकलन एवं मूल्यांकन–विश्लेषण के साथ–साथ तीसरा महत्वपूर्ण एवं आवश्यक मानक तत्व काल–विभाजन एवं नामकरण है इसकी अनुपस्थिति में साहित्येतिहास में इतिहास दृष्टि का अभाव उत्पन्न हो जाता है। इस परिप्रेक्ष्य में डॉ. नगेंद्र ने लिखा है– ''अतः यह बात बराबर ध्यान में रखते हुए कि साहित्य की अखंड परंपरा का निरुपण ही इतिहास का लक्ष्य है। समय–समय पर दिशा–परिवर्तनों और रूप–परिवर्तनों के अनुसार विकासक्रम का अध्ययन करना न सिर्फ उचित है बल्कि जरूरी भी है।''[6] इस प्रकार काल–विभाजन एवं नामकरण विषयवस्तु की ऐतिहासिक क्रमबद्धता को स्पष्ट करने के साथ–साथ उसे खंड एवं वर्गों आदि में विभक्त कर न

केवल उसके अध्ययन को सम्यक बनाता है बल्कि उसमें वैज्ञानिकता एवं तार्किकता का निरुपण भी करता है। गणपतिचंद्र गुप्त के शब्दों में कहें तो ''इतिहास में हम मुख्यतः देश के स्थान पर काल का अध्ययन करते हैं, अतः अध्ययन की सुव्यवस्था की दृष्टि से उसे विभिन्न कालखंडों में बाँट लेना सुविधाजनक एवं उपयोगी सिद्ध होता है। काल–विभाजन का लक्ष्य अंततः इतिहास की विभिन्न परिस्थितियों के संदर्भ में उसकी घटनाओं एवं प्रवृत्तियों के विकासक्रम को स्पष्ट करना होता है साहित्येतिहास पर भी यह बात लागू होती है।''[7]

काल–विभाजन एवं नामकरण साहित्येतिहास लेखन की विशिष्ट प्रणाली के साथ एक समस्या मूलक पद्धति भी है क्योंकि कालखंडों का निर्धारण एवं नामकरण किसी यादृच्छिक आधार पर नहीं किया जा सकता बल्कि इस हेतु तर्कसंगत एवं सुस्पष्ट आधारों की आवश्यकता है। इस संबंध में डॉ. नगेंद्र ने कुल 6 आधारों की चर्चा की है जो साहित्य जगत में आज प्रायः मान्य हैं– 1. ऐतिहासिक कालक्रम के अनुसार– आदिकाल, मध्यकाल आदि 2. शासक और शासन काल के अनुसार– विक्टोरिया युग, मराठा काल आदि 3. लोकनायक और उसके प्रभावकाल के अनुसार– चैतन्यकाल, गाँधीयुग आदि 4. साहित्य नेता एवं उसकी प्रभाव परिधि के आधार पर– रवींद्र युग एवं भारतेंदु युग 5. राष्ट्रीय, सामाजिक अथवा सांस्कृतिक घटना या आंदोलन के आधार पर– भक्तिकाल, पुनर्जागरण काल आदि 6. साहित्यिक प्रवृत्ति के नाम पर–रोमानी युग, रीतिकाल, छायावाद युग आदि। उपरोक्त में मुख्यतः चार आधारों को लेकर हिंदी साहित्य को आदिकाल, भक्तिकाल, रीतिकाल एवं आधुनिक काल नामक चार नामकरणों में विभक्त किया गया है। प्रस्तुत शोध पत्र का विषय गद्य साहित्य के क्षेत्र से संबंधित है। इस संबंध में यह महत्वपूर्ण है कि हिंदी साहित्य में प्रयुक्त गद्य विधाओं में केवल पाँच विधाएँ ही काल–विभाजन एवं नामकरण के दायरे में आती हैं बाकी गद्य विधाओं को अन्य गद्य विधा जैसे परिशिष्ट रूप में व्यक्त कर स्वतंत्रता पूर्व एवं पश्चात् जैसे बेहद सर्वसाधारणीकृत नामकरण में बाँट दिया जाता है। जो किसी भी दृष्टिकोण से सर्वथोचित नहीं है। इसका प्रथम कारण तो यह है कि आज स्वतंत्रता पश्चात् 70 वर्ष से भी अधिक समय बीत चुका है ऐसे में स्वतंत्रता पूर्व से जोड़कर विपुल साहित्य लेखन इन विधाओं में किया गया है। जिसका कालगत साहित्येतिहासिक ढंग से निरूपण आवश्यक है। वहीं स्वतंत्रता पूर्व एवं पश्चात् इतना व्यापक नामकरण है कि साहित्य के साथ–साथ अन्य क्षेत्रों में भी प्रयोग किया जाता रहा है। फिर एक बड़ी समस्या एकरूपता की भी है क्योंकि नामकरण के 5 गद्य विधाओं का आधार साहित्य नेता के आधार पर व्यक्तिमूलक है। जबकि इनमें ऐसा नहीं है।

जहाँ तक बात रिपोर्ताज की है तो इस संबंध में सर्वप्रथम यह कह देना उचित है कि अन्य कथेतर विधाओं के समान इसका लेखन भी 1938 ई. के आस–पास से आरंभ होता है। ऐसे में अन्यों की भाँति इस विधा ने भी लेखन क्षेत्र में 80 वर्ष से अधिक का समय पार कर लिया है। जिस कारण इसके अंतर्गत इतना लेखन कर लिया गया है कि वह प्रमुख गद्य विधाओं में प्रचालित काल–विभाजन एवं नामकरण के आधार का प्रयोग कर सके। कहने का तात्पर्य यह है कि जिस प्रकार नाटक में प्रसाद, उपन्यास एवं कहानी में प्रेमचंद तथा निबंध एवं आलोचना में शुक्ल जी को केन्द्र में रखकर पूर्व एवं पश्चात् के आधार पर काल–विभाजन एवं नामकरण की प्रथा प्रचलित है ठीक उसी आधार पर रिपोर्ताज में भी रेणु को केंद्र में रखकर रेणु पूर्व, रेणुयुगीन एवं रेण्वोत्तर नामक काल–विभाजन एवं नामकरण किया जा सकता है। इसके यथौचित्य के संबंध में उपरोक्त के अतिरिक्त अन्य तर्क भी द्रष्टव्य हैं। सर्वप्रथम यह कि यह नामकरण भी पूर्ववर्तियों की भाँति साहित्यनेता एवं व्यक्तिमूलक आधार पर केन्द्रित है। दूसरा जिस प्रकार प्रसाद, प्रेमचंद एवं शुक्ल जी उन विधाओं के केन्द्र में हैं एवं उनके पूर्व तथा पश्चात् यथोचित लेखन किया गया है, ठीक वही स्थिति रिपोर्ताज विधा में रेणु की भी है। तीसरे प्रसाद, प्रेमचंद एवं शुक्ल जी द्वारा जैसे संबंधित विधाओं में न केवल व्यापक बल्कि बहु आयामी, सर्वक्षेत्रक एवं प्रवृत्ति निर्धारक के साथ–साथ केन्द्रीय महत्व का लेखन किया है, ठीक वैसे ही रेणु जी का रिपोर्ताज लेखन इन्हीं विशेषताओं पर आधारित है। अर्थात् रेणु ने न केवल सर्वाधिक रिपोर्ताज लिखें हैं बल्कि वे विविध आयामी एवं बहुक्षेत्रक होने के साथ–साथ जनपक्षधर एवं प्रभावोत्पादक भी हैं। अंतः निःसंदेह यह कहा जा सकता है कि नाटक के क्षेत्र में प्रसाद व कथा साहित्य में प्रेमचंद की जो भूमिका एवं महत्व है, ठीक वही रिपोर्ताज के क्षेत्र में रेणु की है। इसीलिए उन्हें केंद्र में रखकर रिपोर्ताज साहित्य के काल–विभाजन एवं नामकरण का सवर्थोचित प्रयास किया जाना चाहिए।

हिंदी रिपोर्ताज साहित्य में उपरोक्त तथ्य एवं तर्कों के आधार पर एक संभावित काल–विभाजन एवं नामकरण इस प्रकार प्रस्तुत किया जा सकता है–

1. **रेणु पूर्व युगः** 1950 ई. से पूर्व–इसके अंतर्गत माधवानुज, कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर', उपेंद्रनाथ अश्क, शिवदान सिंह चौहान, रांगेय राघव तथा प्रकाश चंद्र गुप्त आदि रिपोर्ताजकारों के रिपोर्ताज लेखन को रखा जा सकता है।
2. **रेणु युगीनः** 1950–1977 ई. इस समय का आधार रेणु का पहला प्रौढ़ रिपोर्ताज 'हड्डियों का पुल' का प्रकाशन तथा अंतिम रिपोर्ताज संग्रह 'ऋणजल धनजल' का प्रकाशन है। इस कालखंड के अंतर्गत अमृतराय, फणीश्वरनाथ रेणु, रामकुमार वर्मा, भगवतशरण उपाध्याय, शिवसागर मिश्र, धर्मवीर भारती, श्रीकांत वर्मा, विवेकी राय आदि रिपोर्ताजकारों के रिपोर्ताज लेखन को रखा जा सकता है।
3. **रेण्वोत्तरः** 1977 से अद्यतन– इसके अंतर्गत मणिमधुकर, ललित शुक्ल, भीमसेन त्यागी, मदन मोहन जोशी, बलराम, सत्यनारायण, रामशरण जोशी, अनिल त्रिगुणायत, आनंद स्वरूप वर्मा जैसे रिपोर्ताजकारों के रिपोर्ताज लेखन को शामिल किया जा सकता है।

इस प्रकार साहित्येतिहास लेखन एवं गद्य–साहित्य सम्यक पठन–पाठन में आवश्यक पद्धति काल–विभाजन एवं नामकरण के महत्व को समझते हुए गद्य विधाओं में मुख्य पाँच के अतिरिक्त तथाकथित अन्य गद्य–विधा नाम से प्रचलित विधाओं में भी सुस्पष्ट काल–विभाजन एवं नामकरण की महती आवश्यकता है, ताकि इन्हें हाशिए से हटाकर मुख्य साहित्य धारा में स्थापित किया जा सके एवं मुख्य गद्य साहित्य की भाँति इनकी महत्ता को स्थान देते हुए रचनाकर्म एवं अध्ययन क्षेत्र में व्यायकता लायी जा सके। एक संभावित विकल्प के रूप में प्रस्तुत शोध पत्र में रिपोर्ताज के संभावित काल–विभाजन एवं नामकरण को देखा जा सकता है।

संदर्भ

1. डॉ. कैलाश चंद्र भाटिया, साहित्य में गद्य की नई विविध विधाएँ, पृष्ठ–11
2. हिंदी साहित्य का वृहद इतिहास, चतुर्दश खंड, भाग–6, पृष्ठ–445
3. शिवदान सिंह चौहान, साहित्यानुशीलन, पृष्ठ–53
4. रामविलास शर्मा, कथा विवेचना और गद्य शिल्प, पृष्ठ–146
5. रांगेय राघव, तूफानों के बीच, भूमिका
6. डॉ. नगेंद्र, हिंदी साहित्य का इतिहास, पृष्ठ–35
7. गणपति चंद्र गुप्त, हिंदी साहित्येतिहासः परंपरागत दृष्टिकोण एवं नए सिद्धांत, पृष्ठ–54